समय से संवाद 14

संस्कृति

विविध परिप्रेक्ष्य

सम्पादक : मुन्ना पाण्डेय

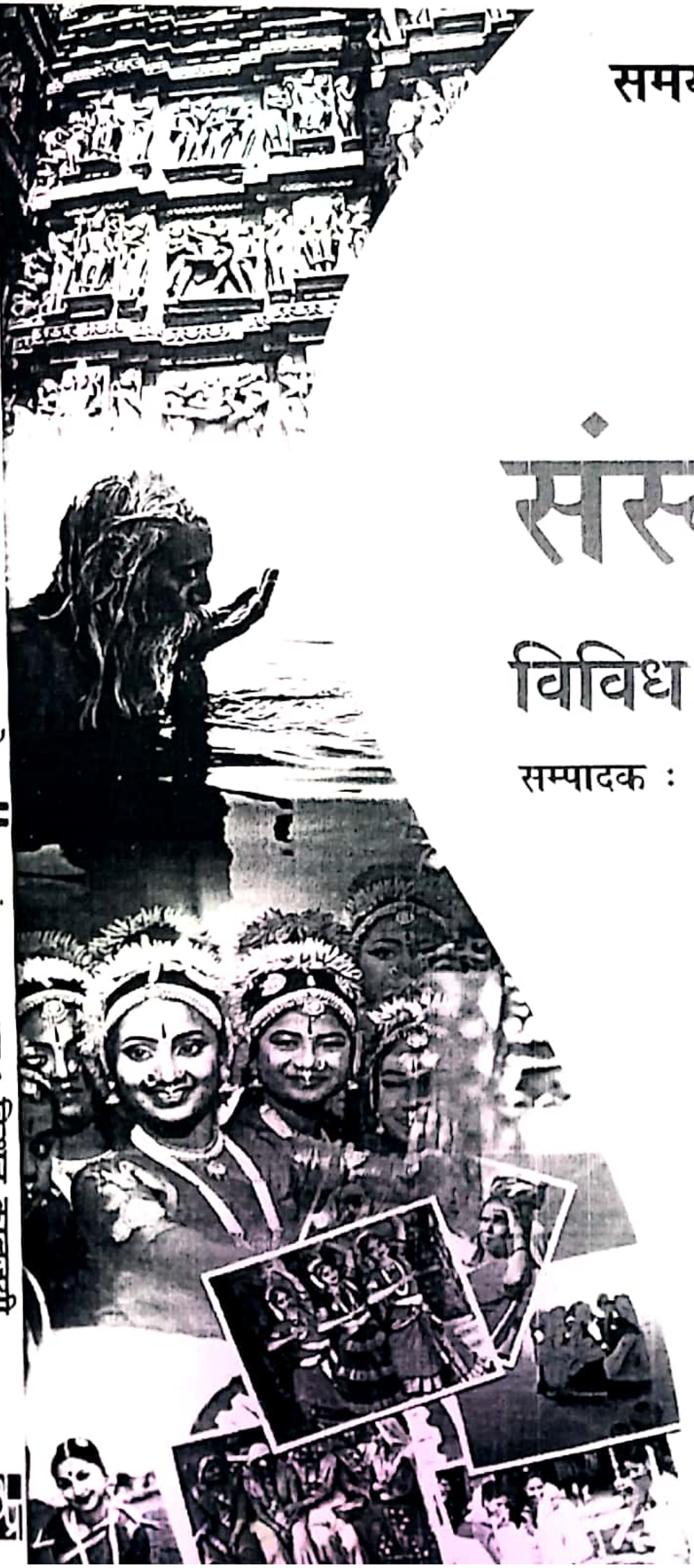

संस्कृति : विविध परिप्रेक्ष्य || सं. : मुन्ना पाण्डेय || शृंखला सम्पादक : किशन कालजयी

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

समय से संवाद	: *किशन कालजयी*	*(v)*
भूमिका	: *मुन्ना कुमार पांडेय*	*(vii)*
संस्कृति : सन्दर्भ और प्रकृति	: *नीरज*	13
भारतीय संस्कृति आखिर होती क्या है?	: *स्वयं प्रकाश*	21
संस्कृति विमर्श : नये सरोकारों की तलाश	: *ललित जोशी*	26
संस्कृति की राजनीति या राजनैतिक संस्कृति?	: *रवि श्रीवास्तव*	37
हिन्दुत्व की संस्कृति : व्याख्या के कुछ संकट (राधाकृष्णन के बहाने)	: *प्रियम अंकित*	55
भारतीय मुस्लिम संस्कृति कितनी सहिष्णु, कितनी उदार	: *एस. नूरुल हसन*	60
उपभोक्ता संस्कृति के दौर में साहित्य	: *अमरनाथ*	67
अलगाववादी संस्कृति और पर्यावरणिक विमर्श	: *दिलीप कुमार कौल*	72
'भारतीय संस्कृति' और पॉपूलर कल्चर	: *सुधीश पचौरी*	78
समकालीन शहर में भिन्न संस्कृतियों का संवाद	: *मिहिर पंड्या*	92
लोक-संस्कृति में प्रवसन	: *धनंजय सिंह*	101
आदिवासी संस्कृति और हम	: *धनंजय वर्मा*	110
संस्कृति और नाटक	: *पुंज प्रकाश*	114
लोक-संस्कृति : बदलाव के विविध पहलू	: *डॉ. राज भारद्वाज*	122
लेखक परिचय		127

Scanned by CamScanner

संस्कृति : सन्दर्भ और प्रकृति

नीरज

'संस्कृति' अपने-आप में काफी विवादास्पद, संश्लिष्ट एवं अनिश्चयमूलक अवधारणा है। मानव-सभ्यता के पूरे इतिहास में इस शब्द के अभिधार्थ तक पहुँचने के जितने अकादमिक एवं गैर-अकादमिक, औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रयास हुए हैं, उतने शायद ही किसी और अवधारणा पर हुए होंगे। किसी के लिए संस्कृति 'सभ्यता से संरक्षित और सुरक्षित आत्मगौरव का खजाना' है तो किसी के लिए 'समस्त सीखा हुआ व्यवहार।' कोई 'धर्म एवं परम्पराओं' को संस्कृति का मूलाधार घोषित करता है तो कोई 'भाषा एवं इसके सभी उपादानों' को। किसी के लिए 'साहित्य और कला' जैसी चीजें ही संस्कृति हैं तो किसी के लिए 'श्रेष्ठतर बौद्धिक क्षमताओं' का द्योतन करवाने वाली चीज संस्कृति है।

बौद्धिक विमर्शकारों के यहाँ भी संस्कृति को प्रायः 'शासकों की संस्कृति' वाला रूप ही मुख्य मुद्दा रहा है, लेकिन यहाँ सवाल यह भी है कि परम्परा से चली आती हुई चीजें अगर संस्कृति हैं तो क्या हम बलि-प्रथा, सती-प्रथा, बाल-विवाह एवं इन जैसी सामाजिक विकृतियों पर गौरवान्वित महसूस कर सकते हैं। संस्कृति अगर जीवन जीने की ही पद्धति है तो फिर हमें क्यों बदलते मूल्यों को उसमें शामिल करने के लिए इतनी जद्दोजहद करनी पड़ती है। सभ्यता के साथ संस्कृति का कैसा सम्बन्ध होता है? मनोरंजन से लेकर प्रभावात्मकता के सन्दर्भ तक में क्या संस्कृति के तत्त्व एक जैसे ही कार्य करते हैं? संस्कृति मनुष्य निर्मित चीज है या ईश्वर निर्मित उपादान। इतना ही नहीं, आखिर क्या कारण है कि शहर के मुकाबले गाँव, सवर्ण के मुकाबले अवर्ण, दूसरी भाषाओं (खासकर अँग्रेजी) के मुकाबले मातृभाषाएँ हीन और कुसंस्कृत करार दिये जाते हैं? जनजातियों, दलितों, स्त्रियों एवं बच्चों तक को एक लम्बे समय तक संस्कृति के दायरे से बाहर ही माना जाता रहा है। संस्कृति के सन्दर्भ में भी ऐसे और अनुत्तरित सवाल हैं, जिनसे हम रोजाना रू-ब-रू होते रहते हैं। इसलिए इसके पहले कि भूमंडलीय संस्कृति की पड़ताल की जाये हम संस्कृति को समझने की एक कोशिश करते हैं।

Scanned by CamScanner